**त्याग सद्गुण**

भगवद गीता, १६ अध्याय (श्लोक २) में **त्याग** को दैवी गुण बताया गया है |

**त्याग** को गलती से संन्यास या किसी वास्तु, कर्म या आश्रम को छोड़ देने की क्रिया (सांसारिक दृष्टि, वैराग्य) समझा जाता है | परन्तु **त्याग** तो उस दैवी भाव की ओर संकेत करता है जिस पर अपने कर्म आधारित करके हम इश्वर के साथ निकटता का अनुभव करते हैं और अपने कन्धों से सांसारिक बोझ (कर्ता, कर्म फल) उतारा हुआ महसूस करते हैं |

**त्याग** का अर्थ केवल एक है **- सांसारिकता को छोड़ना (leave temporary) और सत्य को पकड़ना (hang on to the permanent) और त्याग का भाव हम में है, यह समझने के तीन संकेत हैं:**

* **कर्तापन का अभाव** - "मैं" अपने मन से कुछ नहीं कर रहा, केवल इश्वर की आज्ञा से कर रहा हूँ सेवक रूप में
* **फलेच्छा न होना** - मुझे कुछ नहीं चाहिए संसार से क्यूंकि मैं इश्वर पर ही निर्भर हूँ
* **स्थूल वस्तुओं** का उपयोग (i.e. वस्तुओं और द्रव्य का उपयोग और आवश्यकता अनुसार संरक्षण - भोग नहीं)

**त्याग** एक साधक को **निष्काम** बनाता है क्यूंकि साधक अपने कर्म के फलों को इश्वर के चरणों में समर्पित कर देता है | ऐसा करने से साधक अपनी शक्ति बढ़ती हुई महसूस करता है क्यूंकि वह इश्वर से जुड़ जाता है और जानता है की आगे जो भी होगा, उसके हित के लिय ही होगा और इश्वर की आज्ञा से होगा |

सब धार्मिक मतों का आदर करते हुए, अपने साधन पर विश्वास रखना भी एक प्रकार का **त्याग** **(भिन्नता की भावना का त्याग)** है क्यूंकि यदि हम ऐसा कर सके, तो हमनें अपनी प्रार्थना "सर्वेभवन्तु सुखिना" को सफल कर दिया, सबको आदर दे दिया, सही और सही में निर्णय कर लिया (deciding between good and good) |

**त्याग** मन का भाव है और शारीर से वही होता है जो हम मन में स्थापित होने देते हैं | **त्यागा वह जाता है जो हमारे पास हो**, इसलिए हमें जो मनुष्य जीवन मिला है, उसमें हम क्या क्या त्याग सकते हैं - कर्म फल (कर्म नहीं), अभिमान (सेवक भाव नहीं), राग द्वेष (कर्त्तव्य नहीं), हिंसा (मित्रता और सदाचार नहीं) - यह सब सूक्ष्म हैं, इसलिए इनका त्याग केवल मन से हो सकता है, शरीर से नहीं |

**श्रीरामचरितमानस के सुन्दर काण्ड में श्री राम जी के वचन हैं –**

***जौं नर होइ चराचर द्रोही, आवे सभय सरन ताकि मोहि | तजि मद मोह कपट छल नाना, कराऊँ सद्द तेहि साधू समान |***

***“कोई मनुष्य सम्पूर्ण जड़ चेतन से जगत का द्रोही हो, यदि वह भी भयभीत होकर मेरी शरण तक कर आ जाए और मद, मोह तथा नाना प्रकार के छल-कपट त्याग दे, तो मैं उसे बहुत शीघ्र साधू के सामान कर देता हूँ |”***

ऐसा कौन होगा जो इश्वर के यह वचन सुनकर भी "त्याग" दैवी गुण को न अपनाये?